विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय (सी० सी० ए०)दिनांक 05-03-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित।

कहानी शबरी की

शबरी का असली नाम श्रमणा था, वह भील सामुदाय के शबर जाति से सम्बन्ध रखती थीं। उनके पिता भीलों के राजा थे। बताया जाता है कि उनका विवाह एक भील कुमार से तय हुआ था, विवाह से पहले सैकड़ों बकरे-भैंसे बलि के लिए लाये गए जिन्हें देख शबरी को बहुत बुरा लगा कि यह कैसा विवाह जिसके लिए इतने पशुओं की हत्या की जाएगी। शबरी विवाह के एक दिन पहले घर से भाग गई। घर से भाग वे दंडकारण्य पहुंच गई।

वनवास के दौरान जब माता सीता का हरण दुष्ट रावण ने कर लिया, तब व्याकुल श्रीराम और लक्ष्मण माता सीता की खोज में मतंग मुनि के आश्रम तक आ पहुंचे।

जहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि वहाँ एक शबरी नामक वृद्ध स्त्री जो कि मतंग मुनि की शिष्या थी। अपने गुरु के कहे अनुसार अपने कुटिया में प्रभु श्रीराम के आने की प्रतीक्षा कई वर्षों से कर रही है।

श्रीराम जब वहाँ पहुँचे तो भाव विभोर होकर शबरी ने प्रभु का सत्कार किया और उनसे कहा कि "आपको देने के लिए मेरे हृदय के अलावा कुछ और नही है परन्तु मेरे कुटी के पास के मीठे बेर जो कि मैंने खुद चखे हैं ये आप ग्रहण करें"।

भगवान ने शबरी का यह स्नेह देखकर उसके जूठे बेर प्रेमपूर्वक ग्रहण किये, जो लक्ष्मण को ठीक नही लगा उन्होंने वह बेर ग्रहण नहीं किये और उन्हें दूर फेक दिया ।

कहा जाता है उन बेरो ने ही संजीवनी का रूप ले लिए और अन्ततः लक्ष्मण को वह संजीवनी ग्रहण करनी पड़ी जब वह गम्भीर रूप से घायल हो गए थे।

शबरी माता ने ही राम और लक्ष्मण को सुग्रीव तथा हनुमानजी के बारे में अवगत कराया और उन्हें उनसे मिलने का मार्ग बताया था।

शिवरीनारायण से ही लगा हुआ महानदी के पार गिधौरी नामक स्थान है जहाँ जटायु गिद्ध ने श्रीराम के गोद मे अपने प्राण त्यागे थे और दुष्ट रावण के बारे में बताया था।